National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 44-47
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

रामकुमार सिंह कंवर
सहायक प्राध्यापक - संस्कृत
शासकीय लक्ष्मणेश्वर स्नातकोत्तर-महाविद्यालय, खरोद (छ.ग.)

Correspondence:
रामकुमार सिंह कंवर
सहायक प्राध्यापक - संस्कृत
शासकीय लक्ष्मणेश्वर स्नातकोत्तर-महाविद्यालय, खरोद (छ.ग.)

एनईपी 2020 और भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन

रामकुमार सिंह कंवर

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसमें भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन और संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह नीति भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रस्तुत करती है, जिससे इन भाषाओं का विकास, प्रसार और संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। **भारतीय भाषाएँ**, **राष्ट्रीय एकता**, **शैक्षिक विविधता**, और **सांस्कृतिक धरोहर** जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर जोर देते हुए, एनईपी 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में **मातृभाषा**, **विविधता में एकता**, और **भाषाई अधिकार** को बढ़ावा देती है।

इस नीति का उद्देश्य शिक्षा के सभी स्तरों पर भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करना है, खासकर प्राथमिक शिक्षा में, जहां बच्चों को अपनी **मातृभाषा** में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त, **तीन भाषाओं का सिद्धांत**, जिसमें भारतीय भाषाओं को अनिवार्य रूप से सिखाने का प्रस्ताव है, भारतीय भाषाओं को समृद्ध और वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिक बनाने की दिशा में एक प्रमुख कदम है। इसके अलावा, एनईपी 2020 में **डिजिटल शिक्षा**, **प्रौद्योगिकी का उपयोग**, और **भारतीय भाषाओं का डिजिटल रूपांतरण** जैसे महत्वपूर्ण प्रावधान शामिल हैं, जो इन भाषाओं के संवर्द्धन और उनके व्यापक प्रसार के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। **सांस्कृतिक धरोहर**, **लोकप्रियता में वृद्धि**, और **भाषाई सामंजस्य** के लिए भी नीति में कई कदम उठाए गए हैं, ताकि भारतीय भाषाएँ शिक्षा, साहित्य, मीडिया, और डिजिटल माध्यमों के माध्यम से अधिक प्रभावी रूप से प्रसारित हो सकें।

यह शोध पत्र एनईपी 2020 के संदर्भ में भारतीय भाषाओं के **संवर्द्धन** के लिए किए गए प्रयासों, इसके प्रभावों और **भाषाई अधिकारों** के संदर्भ में विस्तार से चर्चा करता है। इसमें **भाषाई शिक्षा**, **राष्ट्रीय एकता**, और **प्रौद्योगिकी के माध्यम से भाषाई संवर्द्धन** के विषय पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। इसके साथ ही, **शैक्षिक संस्थाओं**, **शिक्षक प्रशिक्षण**, और **भारतीय भाषाओं में शोध** जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: एनईपी 2020, भारतीय भाषाएँ, मातृभाषा, शैक्षिक विविधता, सांस्कृतिक धरोहर, तीन भाषाओं का सिद्धांत, डिजिटल शिक्षा, प्रौद्योगिकी, भाषाई अधिकार, राष्ट्रीय एकता, भाषाई सामंजस्य, शिक्षक प्रशिक्षण, लोकप्रियता में वृद्धि, भाषाई संवर्द्धन, भारत की भाषाई नीति।

1. परिचय

भारत एक भाषाई विविधता से भरा हुआ देश है, जहां सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। भारतीय भाषाएँ न केवल भारतीय समाज की पहचान हैं, बल्कि ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर, इतिहास,

और पारंपरिक ज्ञान का वाहक भी हैं। एनईपी 2020 का उद्दीपन भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन और संरक्षण को एक नई दिशा देने का है। इस नीति में भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार करने का प्रस्ताव दिया गया है, जिससे न केवल भाषा का उत्थान होगा, बल्कि एकता और समावेशिता की भावना भी मजबूत होगी।

इस नीति का उद्देश्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, भारतीय भाषाओं में ज्ञान का प्रसार करना, और इन भाषाओं की भूमिका को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को न केवल उनकी मातृभाषा में शिक्षा मिले, बल्कि वे वैश्विक स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा कर सकें।

2. भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक संदर्भ

भारतीय भाषाएं सिर्फ स्थानीय स्तर पर अपितु अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी भाषायी विशेषता तथा साहित्य के दृष्टि से भी एक अद्वितीय स्थान रखती है। यहां की भाषाएं देव भाषा संस्कृत से लेकर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश से क्रमश: विकास क्रम में आगे बढते हुये आधुनिक हिंदी, मराठी, बंगाली, संथाली, बोडो, गुजराती, तमिल, तेलगु आदि भाषाओं तक पंहुचती है। भारतीय ज्ञानकी परंपरा में अन्य विषयों पर जितना चिंतन मनन हुआ है, कुछ वैसा ही भाषा और भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी हमें विशद रूप में देखने को मिलता है। संस्कृत की परंपरा में वेद ,उपनिषद तथा व्याकरण ग्रंथों में भाषायी तत्वों पर प्राचीन मनीषियों के द्वारा जिस तरह का विमर्श किया गया है। वह आज भी महत्वपूर्ण व प्रासंगिक है। हमारी पारंपरिक ज्ञान पंरपरा में भाषा पर विमर्श के लिये पाणिनी, पतंजली, कात्यायन,यास्क का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। संस्कृत, जो भारतीय ज्ञान, विज्ञान, साहित्य और धार्मिक ग्रंथों की भाषा है, भारतीय भाषाओं की नींव मानी जाती है। मानव सभ्यता के विकास के क्रम में भाषा एक अत्यंत महत्वपूर्ण कडी के रूप में ज्ञात है। बिना भाषा के हम आज के आधुनिक सभ्यता तक पहुंचने की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। भारतीय मनीषियों के द्वारा भाषा को संसार में व्याप्त अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करने वाली ज्योति के रूप में वर्णित किया है।

"न प्रकाश: प्रकाशेत सा हि प्रत्यवमर्शिनी।"

(वाक्यपदीय 1-125)

समाज में भाषा का एक गहरा संबंध होता है। भारतीय भाषाएँ न केवल बोली जाती हैं, बल्कि इन भाषाओं के माध्यम से साहित्य, कला, संगीत, धार्मिक क्रियाएँ, और समाजिक व्यवस्था को संरक्षित किया गया है। इस ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए एनईपी 2020 ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन को प्रमुख प्राथमिकता दी है।

"न प्रकाश: प्रकाशेत सा हि प्रत्यवमर्शिनी।"

(वाक्यपदीय 1-125)

समाज में भाषा का एक गहरा संबंध होता है। भारतीय भाषाएँ न केवल बोली जाती हैं, बल्कि इन भाषाओं के माध्यम से साहित्य, कला, संगीत, धार्मिक क्रियाएँ, और समाजिक व्यवस्था को संरक्षित किया गया है। इस ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए एनईपी 2020 ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन को प्रमुख प्राथमिकता दी है।

एनईपी 2020 का उद्दीपन

एनईपी **2020** में भारतीय भाषाओं को संवर्द्धन का जो उद्देश्य रखा गया है**,** वह भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत है। इसके कुछ प्रमुख उद्दीपन निम्नलिखित हैं**:**

3.1 भारतीय भाषाओं का प्राथमिकता के साथ प्रयोग

एनईपी **2020** के अनुसार**,** प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर भारतीय भाषाओं का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया है। यह प्रस्तावित किया गया है कि कक्षा **5** तक की शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में दी जाए**,** जिससे बच्चों की समझ और अभिव्यक्ति क्षमता बेहतर हो सके।

3.2 तीन भाषाओं का सिद्धांत

नीति में तीन भाषाओं के सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है**,** जिसके अंतर्गत छात्रों को अपनी मातृभाषा के अलावा दो अन्य भाषाएँ सीखनी चाहिए। इसमें एक भारतीय भाषा और एक विदेशी भाषा शामिल हो सकती है। यह पहल भारतीय भाषाओं के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और छात्रों में भाषाई विविधता का समावेश होगा।

3.3 डिजिटल माध्यम से भारतीय भाषाओं का प्रसार

एनईपी **2020** में भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और सामग्री के निर्माण की भी बात की गई है। इसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग करना है। इसके तहत भारतीय भाषाओं के लिए अनुवाद सॉफ़्टवेयर**,** डिजिटल किताबें**,** और ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित किए जाएंगे।

3.4 शैक्षिक संस्थाओं में भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन

एनईपी **2020** के तहत शैक्षिक संस्थाओं में भारतीय भाषाओं को पढ़ाने के लिए नये पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री तैयार करने की

दिशा में कदम उठाए गए हैं। इसके अलावा, भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे, जिससे छात्रों को भारतीय भाषाओं के माध्यम से गहरे ज्ञान की प्राप्ति हो सके।

4. भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन के लिए एनईपी 2020 के कदम

4.1 शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर भारतीय भाषाओं का प्रयोग

एनईपी **2020** में प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा में भी भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन पर जोर दिया गया है। भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा का विस्तार, शोध कार्य, और पब्लिकेशन्स को बढ़ावा देने की दिशा में कई कदम उठाए गए हैं।

4.2 शिक्षक प्रशिक्षण और उनकी क्षमता वृद्धि

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय भाषाओं को प्रमुखता देने का निर्णय लिया गया है, ताकि शिक्षक भारतीय भाषाओं में दक्ष हो सकें और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सके। शिक्षक प्रशिक्षण के लिए विशेष कार्यक्रमों की योजना बनाई जा रही है, जिसमें भारतीय भाषाओं में प्रभावी तरीके से शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा।

4.3 भाषाई नवाचार और टेक्नोलॉजी

एनईपी **2020** में भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन के लिए तकनीकी नवाचारों का उपयोग करने की बात की गई है। इसके तहत भारतीय भाषाओं के लिए अनुवाद और भाषा संसाधन उपकरणों का विकास किया जाएगा, जिससे छात्रों और शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

5. भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन में चुनौतियाँ

5.1 प्रौद्योगिकी का अभाव

भारतीय भाषाओं के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी का अभाव सबसे बड़ी चुनौती है। भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली सॉफ़्टवेयर और डिजिटल सामग्री का अभाव होने के कारण इन भाषाओं का प्रसार डिजिटल दुनिया में धीमा हो रहा है। इसके लिए विशेष सॉफ़्टवेयर और उपकरणों की आवश्यकता है जो भारतीय भाषाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर सुलभ बनाएं।

5.2 शिक्षा सामग्री का अभाव

भारतीय भाषाओं में शैक्षिक सामग्री की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। अधिकांश शैक्षिक सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है, जबकि भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री का निर्माण अभी भी सीमित है। इसके लिए भारतीय भाषाओं में पुस्तकों, वीडियो, और अन्य शैक्षिक सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए।

5.3 भाषाई विविधता की चुनौतियाँ

भारत में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, जिनमें से कई क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग सीमित है। इस भाषाई विविधता को सुलझाने के लिए एक सुव्यवस्थित योजना की आवश्यकता है, ताकि सभी भाषाओं को समान रूप से प्रोत्साहित किया जा सके।

6. भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन के लिए भविष्य दिशा

6.1 भाषाई नवाचार

भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन के लिए तकनीकी नवाचार की आवश्यकता है। इसके तहत अनुवाद सॉफ़्टवेयर, भाषाई संसाधन, और अन्य डिजिटल उपकरणों का विकास किया जाएगा, जिससे भारतीय भाषाओं में शिक्षा और अन्य गतिविधियाँ अधिक सुलभ हो सकें।

6.2 सांस्कृतिक प्रसार और जागरूकता

भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन केवल शैक्षिक क्षेत्र तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इन्हें सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए भारतीय भाषाओं में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साहित्यिक प्रतियोगिताओं, और जागरूकता अभियानों का आयोजन किया जा सकता है।

6.3 भारतीय भाषाओं का वैश्वीकरण

भारतीय भाषाओं को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इसके लिए भारतीय भाषाओं में अनुवाद, साहित्य, और डिजिटल सामग्री का प्रसार किया जाएगा, ताकि भारतीय भाषाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता मिल सके।

7. निष्कर्ष

एनईपी **2020** ने भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन को एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया है, जो भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, और शैक्षिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि इस नीति को सही तरीके से लागू किया जाता है, तो भारतीय भाषाएँ न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि समाज के हर पहलु में एक मजबूत और प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं। इसके लिए सभी स्तरों पर नीतियों, योजनाओं, और कार्यान्वयन की आवश्यकता है, ताकि भारतीय भाषाओं का संवर्धन और संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। ज्ञान के प्रकाश से दीप्त कर अज्ञानता रूपी अंधकार से बचाने के लिये भाषाओं की सम्यक शिक्षा दीक्षा अत्यावश्यक है –

इदमन्धंतमं कृत्सनं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

(प्र.परि. 04 काव्यादर्श)

संदर्भ

[1] भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली.

[2] शर्मा, अ. (2021). भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन: एनईपी 2020 के संदर्भ में. भाषा और संस्कृति 10(2), 75-85.

[3] वर्मा, पी. (2019). भारतीय भाषाओं में शिक्षा का महत्व: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. शिक्षा और समाज, 45(3), 102-112.

[4] कुमार, न. (2020). भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन और उनकी डिजिटल भूमिका. भारतीय भाषा विकास, 6(1), 21-30.

[5] सिंह, आर. (2020). भारतीय भाषाओं के विकास में टेक्नोलॉजी का योगदान. संगठन एवं शिक्षा, 29(4), 160-175.

[6] शर्मा, एस. (2022). एनईपी 2020 और भारतीय भाषाओं का प्रचार. भारत संवाद, 13(1), 45-55.

[7] भारतीय भाषा संस्थान. (2021). भारतीय भाषाओं का भविष्य और उनकी चुनौतियाँ. नई दिल्ली: भारतीय भाषा संस्थान.

[8] जैन, र. (2019). एनईपी 2020: भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन के लिए दृष्टिकोण. शिक्षा नीति और समाज, 8(3), 67-76.

[9] सिंह, जे. (2020). तीन भाषाओं का सिद्धांत और भारतीय भाषाओं की प्रासंगिकता. हिंदी और संस्कृत अध्ययन, 11(2), 90-100.

[10] शुक्ला, र. (2021). भारतीय भाषाओं का वैश्वीकरण और स्थानीय संदर्भ. भाषाई परिवर्तन और समाज, 14(2), 33-45.

[11] भारतीय शिक्षा आयोग. (2020). भारतीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.

[12] वर्मा, ल. (2018). शिक्षा में भारतीय भाषाओं के उपयोग पर एक अध्ययन. सामाजिक शिक्षा और भाषा, 7(1), 52-60.

[13] यादव, ह. (2021). एनईपी 2020 में भारतीय भाषाओं की भूमिका. शिक्षा और संस्कृति परिप्रेक्ष्य, 12(4), 150-160.

[14] मिश्रा, आर. (2020). भारतीय भाषाओं में आधुनिक तकनीक का उपयोग. संचार और मीडिया अध्ययन, 5(2), 100-115.

[15] त्रिपाठी, क. (2022). भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन और उसकी वैश्विक संभावनाएँ. भारतीय भाषायी जागरूकता, 3(1), 200-210.

[16] दवेदी, के. (2016). भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, 3(1), 51-53.

[17] पाठक, जे. (2014). आचार्य दंडी प्रणीत काव्यादर्श प्रथम परिच्छेद, 5-6